सहज सौन्दर्य

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सौंदर्य का अर्थ है सुन्दरता का भाव । सौंदर्य दो तरह का है– एक भीतरी सौंदर्य है और एक बाहरी सौंदर्य। जब हम ऑखें खोलकर देखते हैं तो सृष्टि का नजारा हमारे सामने दिखाई देता है। कहीं ऊँचे–ऊँचे पर्वत की चोटियां हैं तो कहीं कलकल निनान्द करती हुई नदियों की धारा दिखाई देती है। कहीं वनों से आच्छादित पर्वतमालाएं हैं तो कहीं रेतीली भूमि में चमकता हुआ सोने जैसा कण। कहीं ऊँची–ऊँची अट्टालिकाएं हैं तो कहीं घास फूस की धराशायी झौंपड़ियां दिखाई देती है। विभिन्न प्रकार के जीव–जन्तु शेर, बाघ, चित्ते, पशु–पक्षी जैसे जीव जन्तु प्रकृति के सहज सौंदर्य को बढ़ाते हैं। प्रकृति के पास सौंदर्य का खजाना है। प्रकृति का सौंदर्य सहज सौंदर्य है। मनुष्य के पास मनुष्य का स्वरूप, बनावट, लम्बाई, आकार प्रकार सहज ही है। जब कृत्रिम प्रसाधनों से इसे संवारने का प्रयास किया जाता है तो इसका सौंदर्य और बढ़ जाता है। प्रकृति का हर एक कण सहज सौंदर्य से युक्त है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, वनस्पतियां जब स्वरूप में स्थित रहते हैं तो इनसे अमृत की धारा प्रवाहित होती है। सूर्य और चन्द्रमा का समय पर उदित होना, रात–दिन का होना, षड़ ॠतुओं का होना प्रकृति का सहज सौंदर्य है। बाहर का जगत प्रकृति का जगत है। इसका सौंदर्य चक्षुग्राह्य है। ईश्वर निर्मित सभी वस्तुएं सुन्दर हैं। जैसी दृष्टि होती है वैसी सृष्टि हो जाती है। कभी–कभी बहुत सुन्दर वस्तु भी सुन्दर नहीं लगती और कभी–कभी असुन्दर वस्तु भी सुन्दर लगने लगती है। दृष्टि दोष के कारण भी वस्तुओं के स्वरूप में परिवर्तन दिखाई देता है। बाह्य सौंदर्य के अतिरिक्त आंतरिक जगत में भी झांक के देखना चाहिए। यह आत्मा का जगत है। आत्मा ज्ञान, दर्शन, चारित्र और सुख का खजाना है। प्रियता और अप्रियता राग–द्वेष के कारण सहज सौंदर्य में परिवर्तन आ जाता है। पृथ्वी हमें यह शिक्षा देती है कि मनुष्य को जीवन में सम रहना चाहिए। समता भाव सबसे बड़ा गुण है। समता भाव से ही सहज सौंदर्य का विकास होता है।

सुन्दरता सबको प्रिय है। कुरूपता कोई नहीं पसंद करता। सौन्दर्य बाह्य और आन्तरिक दो प्रकार का है। बाह्य सौन्दर्य का सम्बन्ध भौतिक जगत से है। मानव की सुन्दरता, स्त्री की सुन्दरता इत्यादि सुन्दरता को और अधिक बढ़ाने के लिए सौन्दर्य प्रसाधनों की आवश्यकता पड़ती है। स्त्रियां अपनी साज सज्जा करने के लिए, सौन्दर्य को बढ़ाने के लिए आभूषणों और अनेक प्रकार के कृत्रिम प्रसाधनों का प्रयोग करती हैं। प्रसाधन के कृत्रिम उपक्रम सौन्दर्य को बढ़ाने में थोड़े सहायक अवश्य होते हैं किन्तु इनका स्थायी मूल्य नहीं है। मूल सौन्दर्य आन्तरिक सौन्दर्य होता है। इसकी अभिव्यक्ति होने पर व्यक्तित्व में रूपान्तरण हो जाता है। ईश्वर का बनाया हुआ यह जगत सत्यं, शिवं और सुन्दरम् से युक्त है। प्रकृति के सभी उपादान अपने मूलरूप में इतने सुन्दर हैं कि आगन्तुकों को अपनी ओर सहज ही आकर्षित कर लेते है। भारत की प्राकृतिक सुषमा अवर्णनीय है। छः ऋतुओं का होना केवल भारत में ही पाया जाता है। मौसम के अनुरूप यहां वेशभूषा भी परिवर्तित होती रहती है। प्रकृति ने भारत को मौलिक रूप से वह सौन्दर्य प्रदान किया है कि वैसा सौन्दर्य विश्व के किसी भी देश में नहीं है। देवता लोग भी इसकी प्रशंसा में गीत गाते है। हिमालय पर्वत भारत की उत्तरी सीमा को सुशोभित कर रहा है। भारत को तीन दिशाओं से सागर की उत्ताल तरंगे इसका पाद प्रक्षालन करने के लिए तैयार रहती है।

अपने भीतर के दोषों को सुधार करना सबसे बड़ी बात है। हमारा यह चिंतन होना चाहिए कि जगत निर्दोष सब मेरा दोष। जो भीतर से शुद्ध होता हैं उसकी वाणी सिद्ध हो जाती है। भाव शुद्धि के साथ–साथ विचार की शुद्धि भी आवश्यक है। इससे अन्तःकरण की शुचिता बढ़ती है। जीवन में कमलवत् रहना चाहिए। जगत् में रहते हुए जगत् के पदार्थों से निर्लिप्त रहना चाहिए। जैसे कमल कीचड़ में रहता है लेकिन कीचड़ का कोई भी प्रभाव कमल पर नहीं पड़ता वैसे ही जो मानव इस संसार में रहता है उसी का रहना सार्थक है। मनुष्य और पशु में विवेक का अन्तर है। जिस मनुष्य में ज्ञान, वैराग्य, शुचिता और चारित्र की प्रधानता होती है उसका जीवन निर्मल और उसकी भाव धारा पवित्र होती है। जगत में रहते हुए जो साधक अपना जीवन ईश्वर से जोड़ लेता है उसकी बुराई दूर हो जाती है। मौलिक सौन्दर्य भारतीय संस्कृति की आत्मा है। इसको सत्यं शिवं सुन्दरम् के द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। जहां

पर सत्य रहता है वहां पर शिव रहेगा और जहां शिव रहेगा सुन्दरता वहां अपने आप रहेगी। सत्यं का अर्थ है सत्य। ईश्वर को सत्य कहा गया है। सत्य ही ईश्वर है और ईश्वर ही सत्य है। सत्य के सिवा इस संसार में जितनी भी वस्तुएं है सब औपाधिक हैं। यह संपूर्ण सृष्टि ईश्वर के द्वार रचित है। इसमें सत्य समाया हुआ है। अपने–अपने कर्मों के अनुसार सभी प्राणी इस संसार में जन्म लेते हैं और कर्मों का भोगकर यथास्थान चले जाते हैं। इसलिए मानव को सत्कर्म ही करना चाहिए। सत्कर्म करने से यह लोक तो सुधरता ही है परलोक भी सुधर जाता है। महापुरुषों का जीवन सत्य से अनुप्राणित है। सत्य और अहिंसा के द्वारा उन्होंने देश को आजाद करा दिया। सत्यं शिवं और सुन्दरम् जब व्यवस्था में आ जाता है तो रामराज्य का अवतरण होता है।